जीवन का बलिदान करने वालों अब दिव्यता का आह्वान करो

इन कोमल कलियों का बलिदान देखकर किसका मन प्रेरणा व उत्साह से नहीं भरेगा! जो फूल अभी खिले भी नहीं है, जिनमें अभी सुगन्ध भरनी बाकी है, वे चले हैं इस वीरान में पुष्प उगाने, वे चले हैं इस दुर्गन्ध भरी वसुन्धरा पर पवित्रता की सरिता बहाने... क्यों न गौरव होगा, उनके जन्म देने वालों को भी और क्यों न गर्व होगा उसको भी, जिसका इशारा मिलते ही इन्होंने ये बलिदानी कदम उठाया। ये कलियां महकते पुष्प बन जाएं, ये कलियां विश्व की प्रेरक बन जाएं, ये कलियां निर्बलों व निर्धनों का सहारा बन जाएं... इनको बस ऐसी ही शुभ-भावनाओं की आवश्यकता है।

इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में हजारों आत्माएं अपने जीवन रूपी पुष्प को शिव पर अर्पित कर चुकी हैं। ये महान विभूतियां कलियुग में रहते हुए भी कलियुग से बहुत दूर निकल आई हैं और पुन: लौटने का किसी का भी कोई इरादा नहीं है। तो क्यों न इस जीवन को दिव्यता से भर दें ताकि संसार हममें ही प्रभु का दर्शन कर सके। तो हमें अन्तर्मुखी होकर देखना है कि ये ईश्वरीय मौजों का काल कैसे बीत रहा है। कहीं ये अनमोल घड़ियां यों ही तो नहीं बीत रहीं... कहीं ये वरदानी समय संघर्षों में ही तो नहीं बीत रहा... कहीं ये अविनाशी कमाई की घड़ियां हमारे हाथ से खाली ही तो नहीं जा रहीं... ऐसा तो नहीं कि कहीं हमें एहसास भी न हो और ये सुनहरा काल यों ही बीत जाए।

मनुष्य की सबसे प्यारी वस्तु ये जीवन है, जबकि इसे ही सेवाओं के लिए स्वाहा कर दिया, फिर भला इस जीवन को दिव्य बनाने के लिए हम एक बार दिल से मेहनत क्यों न करें। जबकि भगवान ने हमारा सभी बोझ भी हर लिया, हमें अपनी छत्रछाया में ले लिया, अपने प्यार में समा लिया और अपना उत्तराधिकारी बना लिया तो देरी किस बात की! तो आओ हम सभी मिलकर संकल्प करें कि जब तक अपने लक्ष्य को नहीं पा लेंगे, तपस्वी जीवन व्यतीत करेंगे, वैभवों से दूर रहेंगे और मुड़कर कभी भी पीछे नहीं देखेंगे। जीवन का बलिदान करने वालो, जरा याद करो अपने उस अतीत को जब तुमने अपनी इस अमूल्य निधि - 'जीवन' को ईश्वर को बलिदान करने का संकल्प किया था। क्या-क्या उमंगें थीं तुम्हारे दिल में? क्या कुछ करने के साहस के साथ कदम आगे बढ़ाये थे? जीवन के किस लक्ष्य को पाने के लिए नि:संकोच होकर और विघ्नों को लात मारकर यह कुर्बानी की थी?

अपने साहस और आत्म विश्वासों को भूलो नहीं। तुम्हारा ये साहस तुम्हारा सहायक बनेगा। समस्याएं और विघ्न तुम्हारे साहस व आत्मविश्वास को समाप्त न करें। जहां साहस व आत्मविश्वास है, वहां कठिनाई व समस्याएं स्वत: ही आत्म-समर्पण कर देती हैं। याद करो उस समय को जब ये घड़ियां बीत जायेंगी... भगवान का नूतन युग रचने का कार्य सम्पन्न हो जायेगा... कोई विजय रत्न बन जायेंगे और कोई अष्ट रत्न... कोई आत्मा को सर्व रसों से भर लेंगे, किसी की तिजोरियां सब खजानों से भर जायेंगी तो कोई हाथ मलते ही रह जायेंगे कि ओह... हमने भाग्य निर्माण के इस काल में क्या-क्या किया! हम तेरे-मेरे की माला में ही उलझे रहे.. हमने मान-शान के पीछे ही जीवन लगा दिया.. हम न सुख दे सके, न सुख ले सके। परन्तु तब समय बीत चुका होगा और हम तब अपने को उन मनुष्यों से अच्छा नहीं समझेंगे जिन्होंने इस धरा पर आये हुए प्रभु को नहीं पहचाना।

योगयुक्त होकर विचार करो जिस पर तुमने स्वयं को बलिदान किया है, उसने प्रत्यक्ष रूप में तुम्हें क्या दिया है? उसने अपनी असीम शक्तियों को तुमसे जोड़ दिया है... उसने तुम्हें अपनी शीतल छाया में विश्राम दिया है, तुम्हें अपने नयनों का नूर बना लिया है... तुम पर उसकी नजर है। और तुम्हें मालूम है कि वह तुमसे क्या चाहता है? उसकी तुमसे श्रेष्ठ कामना है कि -

याद करो उस समय को जब ये घड़ियां बीत जायेंगी... भगवान का नूतन युग रचने का कार्य सम्पन्न हो जायेगा... कोई विजय रत्न बन जायेंगे और कोई अष्ट रत्न... कोई आत्मा को सर्व रसों से भर लेंगे, किसी की तिजोरियां सब खजानों से भर जायेंगी तो कोई हाथ मलते ही रह जायेंगे कि ओह... हमने भाग्य निर्माण के इस काल में क्या-क्या किया!

- ये मेरे चेतन चिराग जग को रोशन करें।
- ये मेरे नयनों के नूर जग के नूर बनें।
- मेरे ये पावन वत्स इस धरा पर उसी तरह चमकें जैसे नभ में सूर्य और चंद्रमा चमकते हैं।
- मेरी इन बलिदानी भुजाओं में तेज हो, दिव्यता हो, प्रकाश हो ताकि मेरे भक्त मेरी छवि इस धरा पर देख सकें।
- मेरे ये लाल, रूहों के सहारे बनें, मानव की डगमगाती किश्ती के किनारे बनें। मेरे ये वत्स विश्व की अमूल्य निधि बनें।
- मेरे ये वत्स जग की शोभा बनें, रोतों के लिए मुस्कान बनें, चिंताओं के लिए चिंगारी बनें, अबलाओं की शक्ति बनें और अपकारियों का दिव्य विवेक बनें और इस वीरान विश्व की हरियाली लायें।
- मेरे ये वत्स अति शक्तिशाली, अडोल अचल बनें, विघ्नों को ललकारने वाले बनें और माया के साम्राज्य को समाप्त कर दें।

तो हे जग को सुगन्धित करने वाले चेतन पुष्पों, बाबा की कामनाओं को पूर्ण करो... सबके प्रेरक बन जाओ... जो लोग तुममें विश्वास नहीं करते, उन्हें भी अपने दिव्य विवेक का चमत्कार दिखाओ। जो तुम्हें रूखी दृष्टि देते हैं, उन्हें तुम सुख भरी दृष्टि के महत्व का आभास कराओ। जो तुम्हें कमजोर समझते हैं, जो तुममें संशय करते हैं, उन्हें तुम सफलता की चैतन्य प्रतिभा बनकर दिखाओ। तुम अपने कदम इतनी तेजी से आगे बढ़ाओ कि वर्षों से चलने वाले यात्री पीछे रह जाएं और उन्हें भी तीव्र गति बनाने का उमंग प्राप्त हो।

तुम अपने जीवन को कहीं भी उलझाओं नहीं, तुम्हें तो जग की उलझनें मिटानी हैं। सेवा की उलझन से, व्यर्थ चर्चाओं की उलझन से, व्यर्थ विस्तार की उलझन से स्वयं को निकाल दो - इनके लिए तो तुमने जीवन का बलिदान नहीं किया। सोचो कि जीवन बलिदान करना कितना बहादुरी का काम है। कितना महत्व है तुम्हारा! परन्तु दूसरे लोग यदि तुम्हारे इस बलिदान के महत्व को स्वीकार नहीं करते तो इसका कारण? तुमने स्वयं ही, स्वयं के महत्व को, स्वयं के जीवन को, स्वयं के अनमोल क्षणों को, स्वयं के प्रत्येक श्वांस व संकल्पों को महत्व नहीं दिया है। तुम स्वयं को महत्व दो तो जग तुम्हें महत्व देगा।

देखने वाले यदि तुममें संशय करते हैं, वे यदि तुम्हें गलत समझते हैं, तो भी तुम अपनी उमंगों को खो न दो। तुम बाबा पर विश्वास करो, जग तुम पर विश्वास करेगा। तुम तो हीरे हो, जहां भी होगे, वहीं चमकोगे। धूल-कण तुम्हारी चमक को कब तक लोप रखेंगे? क्या सूर्य के प्रकाश के अस्तित्व को गड़गड़ाते काले बादल समाप्त कर पाते हैं? बादल हटते हैं और पुन: सूर्य का प्रकाश चारों ओर फैल जाता है। इसलिए भूलकर भी अपने स्वमान को न छोड़ो।

यदि लोग तुम्हें नहीं पहचानते, तुम्हारे दिल की सच्चाई को नहीं समझते, तुम्हारे ऊंचे इरादों का साक्षात्कार नहीं करते तो तुम इसकी भी कामना न करो। गुप्त रहकर अंदर ही अंदर दौड़ों और चुपचाप सबसे आगे निकल कर खड़े हो जाओ। तब तुम्हारी महानताओं को सबको स्वीकार करना ही पड़ेगा। सत्य से कौन आँखें मूंद सकता है। सत्य की शक्ति स्वयं ही सत्य को प्रत्यक्ष करती है। सत्य का ढिंढोरा पीटने की भी आवश्यकता नहीं। तुम सत्य हो, तुम्हारे सत्य का सूर्य अनेकों के अंधकार को दूर करेगा, जरा धैर्य धारण करो।

हे बलिदानी रूहों भूल से भी तुम अपने मार्ग में कांटे न बोना। कभी न भूलना कि और कोई नहीं, आत्मा स्वयं ही अपना मित्र या शत्रु है। सदा अपना मित्र बनकर रहो तो समस्त विश्व तुम्हें मित्र प्रतीत होगा। तुम्हें तो वीरान में चमन खिलाने हैं, पुष्प महकाने हैं, तुम्हें तो कोटि-कोटि रूहों का मार्ग प्रशस्त करना है, यदि तुम्हारे पगों में निशि दिन कांटे ही चुभते रहेंगे, यदि तुम्हारे पग खुद ही रक्त सनित होंगे, तो तुम दूसरों पर अमृत कैसे छिड़कोगे।

इसलिए उठो, अपने बलिदान को सफल करो। तुम्हारे बलिदान से अनेकों को बलिदान की प्रेरणा मिले। अपने जीवन को इतना सुखद कर दो कि अनेक रूहें अपनी जंजीर तोड़ सके। अपने मन को इतना निर्मल कर दो कि अनेकों के मन में पावनता की धारा बह चलें। अपने दिल को इतना साफ कर दो कि सबके दिल एक से जुड़ सकें। याद रखना - तुम्हारा प्रत्येक कदम,

शेष भाग पृष्ठ 11 पर

काठमाण्डु, नेपाल। नेपाल के राष्ट्रपति महामहिम् डॉ.रामवरण यादव को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.राज बहन।

गुवाहाटी। असाम के राज्यपाल जे.बी.पटनायक को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.शीला बहन।

मुम्बई, नेपेन्सी रोड। महाराष्ट्र के राज्यपाल के.शंकरनारायण को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.रूक्कमणी बहन।

दीव। जिलाधिकारी किशन कुमार को 'रक्षा-सूत्र' बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.गीता बहन।

वाराणसी। 'रक्षा-सूत्र' बांधने के पश्चात् समूह चित्र में हैं आई.जी. जी.एल.मीना, सी.आई.एस.एफ.के डी.आई.जी. सिद्धू, क्षेत्रीए संचालिका ब्र.कु.सुरेन्द्र एवं ब्र.कु.दीपेन्द्र।

रीवा। दैनिक जागरण के मुख्य संपादक मदन मोहन को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.निर्मला बहन।